www.krishipravahika.com

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 4, 1-3

Article ID: 166

कददू वर्गीय फसलों में लगने वाले समन्वित कीट पतंगे एवं रोकथाम

अरविन्द कुमार[1]*, डॉ. पंकज कुमार[2]

[1]शोध छात्र, [2]सहायक-प्राध्यापक कीट विज्ञान विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या उत्तर प्रदेश-224229

कददू वर्गीय फसलें बेल वाली होती हैं जैसे- कद्दू, करेला, लौकी, ककड़ी, तोरई, पेढा, परवल एवं खीरा इत्यादि इस वर्ग में आते हैं | भातरवर्ष दुनिया में चीन के बाद सबसे ज्यादा सब्जी उत्पादक देश है | भारत दुनिया का ऐसा देश है, जहां लगभग सभी तरह कददू वर्गीय सब्जियों की खेती की जाती है | यहां सालभर कई तरह की सब्जियां उपलब्ध रहती हैं।

जिन सब्जियों की खेती मैदानी क्षेत्रों में शीतकालीन में की जाती है, वहीं सब्जियां देश के ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों में गर्मियों में संभव हैं, क्योंकि वहां का तापमान इस समय शीतकालीन सब्जियों के लिए उपयुक्त होता है। विभिन्न सब्जियों की खेती में कद्दूवर्गीय सब्जियों का महत्वपूर्ण स्थान है | ये सब्जियां गर्मी और बारिश के मौसम में देशभर में सफलतापूर्वक उगाई जाती हैं | इन सब्जियों में पाए जाने वाले विभिन्न पोषक तत्व और विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं । कद्दूवर्गीय सब्जियों को दो समूहों मे बांटा गया है । पकाकर खाने वाली सब्जियां जैसे कद्दू, लौकी, रामतोरी, चप्पन करेला, टिंडा, परवल और कुंदरु आदि. कच्ची खाने वाली सब्जियां – इनमें खीरा, तरबूज, खरबूज, सरदा मैलन आदि शामिल हैं । यह बाज़ार में लगभग सभी मौसमों में मिलती हैं | इस वर्ग की सब्जियों में अधिक मात्रा में पानी पाया जाता है, साथ में विटामिन्स व् लवण भी पाये जाते हैं | इनको सलाद व् सब्जियों के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। इनमे लगने वाले प्रमुख कीट पौधे के अंकुरण से लेकर फसल तैयार होने तक हानि पहुंचाते हैं।

रेड पम्पकिन बीटल:

पहचान एवं हानि: इस कीट के शिशु व वयस्क दोनों ही फसल को हानि पहुंचाते हैं। वयस्क कीट पौधों के पत्ते में टेढ़े-मेढ़े छेद करते हैं जबकि शिशु पौधों की जड़ों, भूमिगत तने व भूमि से सटे फलों तथा पत्तों को नुकसान पहुंचाते है | यह कीट कद्दू वर्गीय सब्जियों में मुख्य रूप से पाया जाता है | यह कीट लाल रंग का होता है | यह पौधे की शुरूआती अवस्था में पत्तियों को खाकर नष्ट कर देता है, जिससे फसल की बढ़वार बिल्कुल रुक जाती है | इस कीट की मादा पीले रंग की होती है एवं इसका लार्वा क्रीमी सफ़ेद होता है |

रेड पम्पकिन बीटल

नियंत्रण के उपाय:

- फसल खत्म होने पर बेलों को खेत से हटाकर नष्ट कर दें ।
- फसल की अगेती बुवाई से कीट के प्रभाव को कम किया जा सकता है ।
- संतरी रंग के भृंग को सुबह के समय इकट्ठा करके नष्ट कर दें ।
- 4 लीटर पानी में आधा कप लकड़ी की राख का बुरादा और आधा कप चूना मिलाएं और कुछ घंटो के लिए छोड़ दें| छिड़काव से पहले कुछ संक्रमित फसल पर परीक्षण कर के स्प्रे कर दें |
- वयस्क बीटल को आकर्षित कर मारने के लिए ट्रैप फसलों का उपयोग करें|
- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें|
- संक्रमित पौधों को उखाड़कर जला दें या मिटटी में दबा दें|
- डेल्टामेथ्रिन 250 मिली॰ 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें |
- कार्बेरिल 50 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम प्रति लीटर या एन्डोसल्फान 35 ई.सी. 2 मिली प्रति लीटर या एमामेक्टिन बैंजोएट 5 एस.जी. 1 ग्राम प्रति 2 लीटर या इन्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 1 मिली. प्रति 2 लीटर का छिड़काव करें ।

फल मक्खी:

पहचान एवं हानि: यह मक्खी काले व भूरे रंग की होती है | मादा फल मक्खी फल के अन्दर अंडा देती है बाद में लार्वा धीरे - धीरे फल में सुरंग बना कर गुदे को खाना प्रारम्भ कर देती है जिससे फल सड़ने लगता है और विकृत होकर टेढ़ा हो जाता है |

फल मक्खी

1. नियंत्रण के उपाय:

- खेत को खरपतवार रहित रखें |
- ग्रसित फलों को भी एकत्रित करके नष्ट कर दें ।
- मादा को प्रातःकाल पकड़कर नष्ट कर दें |
- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करें |
- कार्बारिल घुलनशील चूर्ण 50 प्रतिशत को एक किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से फसल पर छिडकाव करें|

सफ़ेद मक्खी:

पहचान एवं हानि: यह मक्खी सफ़ेद व पीले शरीर वाली होती है, यह 1 मिली से से भी छोटी होती है| इस मक्खी से फसल में 90 प्रतिशत विषाणु रोग फ़ैलाने में अहम् भूमिका होती है| यह मक्खी फसल पर बैठकर पत्तियों का रस चूस लेती है, जिससे पौधे की बढ़वार रुक जाती है|

सफेद मक्खी

नियंत्रण के उपाय

- इस मक्खी को आकर्षित करने के लिए पिली ग्रीस लगे हुए स्टकी ट्रैप का प्रयोग करना चाहिए|
- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करना चाहिए|
- समय - समय पर खेत की निराइ गुड़ाई करनी चाहिए|
- इमिडाक्लोप्रिड 70 प्रतिशत डब्लू. एस.10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए|
- ट्राईजोफोस 40 प्रतिशत ई.सी. को 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए |

माईट बरूथी :

पहचान एवं लक्षण: इस कीट को नग्न आँखों से देख पाना संभव नहीं हैं| यह लाल रंग व सफ़ेद बालों वाले होते है| यह झुण्ड में रहती हैं| इसका ग्रीष्म ऋतु में खीरा जैसी फसलों पर प्रकोप अधिक होता है, इसके प्रकोप से पौधे अपना भोजन नहीं बना पाते हैं, जिससे पौधे की बढवार रुक जाती है|

माईट बरूथी

नियंत्रण:

- प्रतिरोधक प्रजातियों का चयन करना चाहिए|
- समय - समय पर खेत की निराइ गुड़ाई करनी चाहिए|
- साईंपरमेथ्रिन 9 प्रतिशत एस. सी. 0.8 मिली. प्रति लीटर या डाइकोफाल 18.5 प्रतिशत ई. सी. को 600 से 700 लीटर पानी की दर से 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर छिडकाव करें|